



अख़बार की दुनिया

अख़बार, समाचार-पत्र या न्यूज़ पेपर पढ़ना हमारी आदत में शामिल हो गया है। रोज़ सुबह उठते ही अख़बार वाला अख़बार दे जाता है और हमारी पैनी निगाहें उस पर दौड़ने लगती हैं। शहर में, राज्य में, देश में, दुनिया में कौन-कौन सी घटनाएँ घटीं, उन्हें विस्तार से जानने के लिए हम अख़बार पढ़ते हैं। अख़बार के अलावा रेडियो, टेलीविज़न और अब इन्टरनेट के द्वारा भी समाचार हम तक पहुँचते हैं, परंतु अख़बार पढ़कर हमें विभिन्न समाचारों की विस्तार से जानकारी प्राप्त होती है।

अख़बार पढ़ते समय आप देखते होंगे कि इसमें समाचारों के अलावा और भी सामग्री होती है, जैसे—संपादकीय, कार्टून, फीचर, विज्ञापन आदि। इस प्रकार, अख़बार हमें तमाम महत्वपूर्ण घटनाओं की सूचना कई प्रकार से देता है।

इस पाठ में अख़बार की दुनिया की जानकारी दी जा रही है। आइए, देखें कि अख़बार में क्या-क्या सामग्री शामिल होती है और उसे किस प्रकार तैयार किया जाता है।



उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप—

- अख़बार के विभिन्न अंगों — समाचार, संपादकीय, फीचर, फोटो, कार्टून, ग्राफ़िक्स, विज्ञापन आदि के महत्त्व से परिचित हो सकेंगे,
- एक ही विषय पर छपे अलग-अलग अख़बारों के समाचारों की तुलना कर सकेंगे;
- समाचारों के आधार पर किसी घटना के बारे में अपना निष्पक्ष और तार्किक दृष्टिकोण विकसित कर सकेंगे;
- किसी घटना के बारे में प्रकाशित समाचारों पर लिखकर अथवा बोलकर अपने विचार व्यक्त कर सकेंगे;



टिप्पणी

अख़बार की दुनिया

- समाचारों का विश्लेषण कर सकेंगे;
- समाचारों की भाषा से परिचित होकर उनका लेखन कर सकेंगे;
- समाचारों की उपयोगिता का उल्लेख कर सकेंगे।



क्रियाकलाप-9.1

आप अख़बार पढ़ते हैं। कई अख़बारों से परिचित भी हैं। तो फिर—

1. किन्हीं चार हिंदी अख़बारों के नाम लिखिए।

1.....2.....3.....4.....

2. अख़बार में मुख्य रूप से किस-किस तरह के समाचार छपते हैं?

जैसे—खेल-समाचार, इसी प्रकार के अन्य उदाहरण दें—

.....
.....

9.1 अख़बार का स्वरूप

बहुत से लोगों की धारणा है कि अख़बारों में सिर्फ़ समाचार छपते हैं। लेकिन, अख़बारों में सिर्फ़ समाचार ही नहीं छपते, बल्कि समाचारों पर आधारित और समाचारों से अलग हटकर भी बहुत सारी चीज़ें छपती हैं, जिन्हें हम अलग-अलग नामों से जानते हैं। इन्हें हम अख़बार के अंग भी कह सकते हैं। इन्हीं सारी चीज़ों से मिलकर अख़बार का स्वरूप बनता है। हर अख़बार इन अलग-अलग चीज़ों के लिए अपने ढंग से अलग-अलग स्थान निर्धारित करता है। इससे अख़बार पढ़ने में सुविधा होती है। आइए, अख़बार के स्वरूप या उसके अंगों के बारे में जान लें।



9.2 अख़बार के अंग

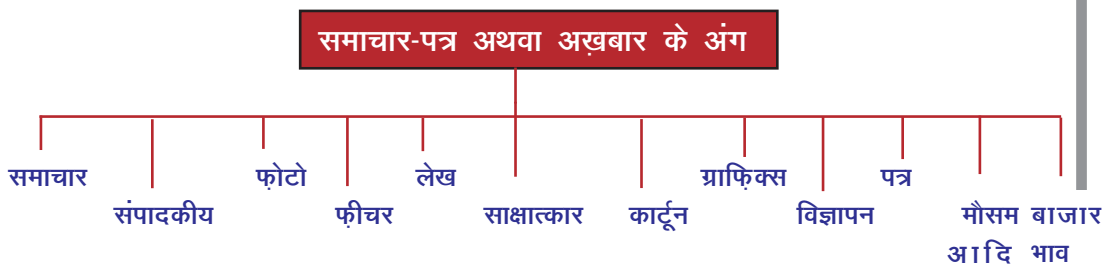
आपने देखा होगा कि हर अख़बार में कुछ चीज़ें अनिवार्य रूप से छपती हैं, जैसे—



टिप्पणी

समाचार, संपादकीय, फोटो, फीचर, लेख, कार्टून, ग्राफ़िक्स और विज्ञापन आदि। इन्हें ही अख़बार के अंग कहा जाता है। अख़बार के मुख्य अंगों को नीचे दिए गए रेखांकन के माध्यम से आसानी से समझा जा सकता है—

यह आवश्यक नहीं कि हर अख़बार में ये चीज़ें एक ही तरह से छपती हों। हर अख़बार इन्हें अपने-अपने ढंग से प्रकाशित करता है। इन्हें प्रकाशित करने की हर अख़बार की अपनी शैली होती है जो उस अख़बार को विशिष्ट स्वरूप और पहचान देती है। आइए, अब अख़बार के विभिन्न अंगों के बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त करें।



चित्र 9.1

9.2.1 समाचार

समाचार अख़बारों का प्रमुख अंग होता है। लेकिन, अब सवाल यह उठता है कि क्या सिर्फ़ अख़बारों में छपने वाले समाचारों को ही समाचार कहा जा सकता है या उन दूसरी घटनाओं को भी, जो अख़बारों में नहीं छप पाती? क्या हर घटना अख़बारों के समाचारों में छप जाती है? ये सवाल स्वाभाविक हैं और आपके मन में भी उठते होंगे। कई बार ऐसा भी होता है कि कोई घटना घटती है, उसे आप देखते हैं या उसके बारे में सुनते हैं और सोचते हैं कि इसका समाचार अख़बार में ज़रूर छपेगा, लेकिन जब दूसरे दिन सुबह आप अख़बार देखते हैं, तो वह समाचार नहीं छपा होता। तब आप सोचते होंगे कि ऐसा क्या कारण था, जिसकी वजह से वह समाचार अख़बारों में नहीं छपा। फिर तरह-तरह के सवाल आपके मन में उठते होंगे। आप यह भी सोचते होंगे कि अख़बार का संवाददाता या अख़बार के संपादकीय विभाग के लोग सिर्फ़ अपनी पसंद के समाचार ही अख़बारों में छापते हैं, लेकिन ऐसा नहीं है। वस्तुतः वही घटना समाचार बनती है जिसका स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय दृष्टि से महत्व होता है।

उसके बाद हर अख़बार अपनी प्राथमिकता के आधार पर समाचारों के पृष्ठों का बँटवारा करता है। पहले पृष्ठ पर राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय महत्व के समाचार छपते हैं। दूसरे और तीसरे पृष्ठों पर स्थानीय समाचारों को स्थान दिया जाता है। इसी प्रकार, अंतिम पृष्ठों पर क्रमशः अंतरराष्ट्रीय समाचारों, अर्थ अथवा व्यापार-जगत् के समाचारों और खेल-संबंधी समाचारों को स्थान दिया जाता है। बीच का एक पृष्ठ संपादकीय और पाठकों के पत्रों के लिए होता है। फिर इन्हीं पृष्ठों पर बीच-बीच में विज्ञापनों को भी स्थान दिया जाता है। इस प्रकार, हर अख़बार में उसके आकार और पृष्ठों की संख्या के



टिप्पणी

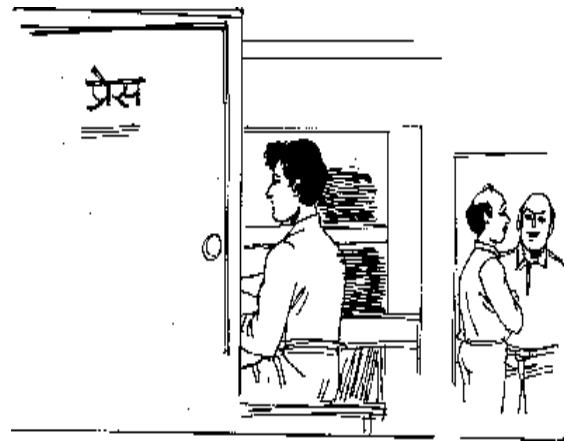
अख़बार की दुनिया

अनुसार ही अलग-अलग क्षेत्रों के समाचारों को प्रकाशित करने के लिए स्थान निर्धारित होता है। ऐसे में किसी भी अख़बार के लिए हर घटना को स्थान दे पाना संभव नहीं होता। इसलिए, हर क्षेत्र की प्रमुख और महत्वपूर्ण घटनाओं के समाचार ही अख़बारों में प्रकाशित हो पाते हैं। हम आगे **समाचारों की चयन-प्रक्रिया** पर बात करते हुए इस पर और विस्तार से चर्चा करेंगे।

समाचारों की चयन-प्रक्रिया

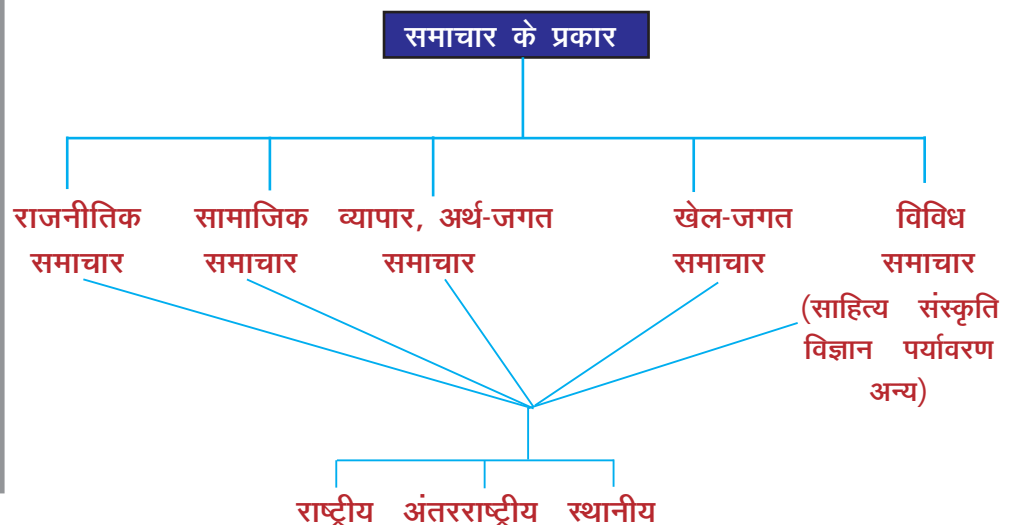
अख़बारों के लिए समाचारों का चयन करना एक बहुत ही महत्वपूर्ण और ज़िम्मेदारी का काम होता है, क्योंकि अख़बारों की साख और लोकप्रियता उनके समाचारों के चयन के आधार पर ही टिकी होती है।

अख़बारों में समाचारों का चयन सामूहिक निर्णय के आधार पर किया जाता है। हर अख़बार में अलग-अलग क्षेत्रों के अनुसार



चित्र 9.2

संवाददाताओं का वर्गीकरण किया जाता है। ये सभी संवाददाता अपने-अपने क्षेत्रों की ख़बरें रोज़ शाम तक अख़बार के संपादकीय कार्यालय में पहुँचाते हैं। इसके अलावा पी. टी.आई., यू.एन.आई., ए.पी., ए.एफ़.पी., रायटर आदि कई सरकारी तथा गैर-सरकारी, देशी-विदेशी समाचार एजेंसियाँ भी हैं, जो अपने सदस्य अख़बारों को प्रतिदिन समाचार भेजती रहती हैं। ये समाचार इन्टरनेट के माध्यम से आते हैं। इसके अलावा शहर की विभिन्न संस्थाएँ और विभाग प्रेस-विज्ञप्ति के माध्यम से भी अपनी गतिविधियों के समाचार डाक, फ़ैक्स या ई-मेल के द्वारा अख़बारों के दफ़्तरों में भेजते हैं। इस तरह



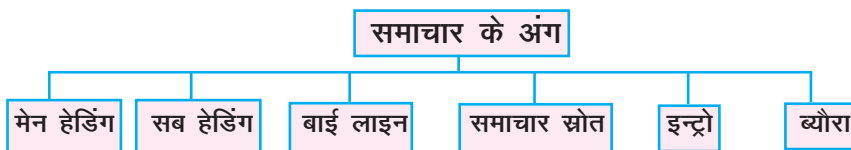


अख़बारों के कार्यालयों में प्रतिदिन शाम तक हज़ारों समाचार एकत्र हो जाते हैं। लेकिन, अख़बारों में स्थान सीमित होता है, ऐसे में हर समाचार को स्थान दे पाना संभव नहीं हो पाता। ऐसी स्थिति में उनके महत्व के आधार पर समाचारों का चयन करना पड़ता है।

समाचारों का चयन पहले तो संवाददाता अपने विवेक के आधार पर स्वयं ही कर लेते हैं। उसके बाद प्रमुख संवाददाता उनमें से समाचारों की छँटनी करते हैं। उसके बाद पृष्ठ की क्षमता को ध्यान में रखते हुए समाचार-संपादक और प्रमुख संपादक आपसी परामर्श के आधार पर समाचारों का चयन करते हैं।

समाचार के अंग

जब कोई संवाददाता किसी घटना की सूचना देता है, तो उसके लिए कुछ बातों का ब्यौरा देना आवश्यक होता है। यह सभी अख़बारों में आपको देखने को मिल जाएगा। इसके बाद समाचारों के महत्व के अनुसार उनकी प्रस्तुति में पाठकों की सुविधा और रुचि को ध्यान में रखते हुए कुछ चीज़ें जोड़ दी जाती हैं। ये चीज़ें समाचार के अंग कहलाती हैं। समाचार के प्रमुख अंगों को निम्नांकित रेखांकन के माध्यम से आसानी से समझा जा सकता है :



आवश्यक नहीं कि सभी समाचारों में इन अंगों का प्रयोग जरूर हो। जैसे सब हेडिंग और बॉक्स-मैटर को सभी समाचारों में प्रयुक्त नहीं किया जाता। इनके अलावा बाकी अंगों को सभी समाचारों में अनिवार्य रूप से देखा जा सकता है। आइए, इन अंगों के बारे में थोड़ी अधिक जानकारी प्राप्त करते हैं। लेकिन, उससे पहले हम समाचार की प्रकृति के बारे में भी थोड़ा जान लें, तो इन अंगों के बारे में जानने में सुविधा होगी।

वास्तव में, समाचार एक तरह से किसी भी घटना के बारे में उठने वाली आम आदमी के मन की सभी जिज्ञासाओं का निदान होता है। दूसरे रूप में समाचार किसी भी घटना का संपूर्ण ब्यौरा होता है। मान लीजिए, आप कहीं जा रहे हैं। रास्ते में एक जगह आपको भीड़ जमा हुई दिखाई देती है। आपके मन में जिज्ञासा उठती है। आप रुकते हैं और पूछते हैं क्या हुआ? जवाब मिलता है — दुर्घटना हो गई। एक आदमी मर गया। आपकी जिज्ञासा बढ़ती है। आप फिर पूछते हैं — कैसे हुआ? जवाब आता है — बस से। आप फिर पूछते हैं — कब हुआ? फिर जवाब में पूरी घटना का ब्यौरा आपको मिल जाता है। एक संवाददाता भी इसी तरह समाचारों का संकलन करता है और उन्हें प्रस्तुत करता है। दरअसल, समाचार क्या, कैसे, कब, कहाँ, क्यों, कौन, किस आदि सवालों (ककारों) के जबावों का संपूर्ण विवरण होता है।



टिप्पणी

अख़बार की दुनिया

मेन हेडिंग (मुख्य शीर्षक)

जैसा कि हमने अभी पढ़ा, किसी भी घटना के बारे में हमारे मन में पहली जिज्ञासा उठती है कि क्या हुआ? यही समाचार का मेन हेडिंग होता है। जैसे दुर्घटना का समाचार देना हो तो मेन हेडिंग हो सकता है – ‘बस दुर्घटना में एक की मौत।’ इस हेडिंग या शीर्षक को पढ़कर ही पूरे समाचार के बारे में एक मोटी जानकारी मिल जाती है। आपने अक्सर लोगों को इस तरह की बातें करते सुना होगा कि आज ‘क्या’ नया समाचार है? आज संसद में ‘क्या’ हुआ? बाज़ार में सोने का भाव ‘क्या’ है या क्रिकेट मैच में ‘क्या’ हुआ आदि। मेन हेडिंग इसी ‘क्या’ का उत्तर होता है। मेन हेडिंग से घटना के बारे में एक मोटी सूचना तुरंत मिल जाती है। फिर उसके बाद की जिज्ञासाएँ उठती हैं। एक ही समाचार के लिए विभिन्न अख़बारों का मेन हेडिंग सभी अख़बारों में भिन्न हो सकता है।

किसी भी समाचार (के मुख्य शीर्षक) को पढ़ने के बाद पाठक के मन में लगातार कई जिज्ञासाएँ उठती हैं और वह एक झटके में उनके बारे में जान लेना चाहता है। उन्हीं जिज्ञासाओं को शांत करने के लिए छोटे-छोटे वाक्यों में सब हेडिंग (उपशीर्षक) दिए जाते हैं। प्रायः सब-हेडिंग बड़े समाचारों के साथ ही दिए जाते हैं, क्योंकि बड़े समाचारों को पढ़ने में पाठक को समय लगता है। इसलिए, जो लोग जल्दी से समाचारों पर एक नज़र डालकर अपने काम पर भागने की जल्दी में होते हैं, उन्हें सब-हेडिंग्स पढ़कर समाचार की मुख्य-मुख्य बातों का पता चल जाता है।

बाइ लाइन

समाचार लिखने वाले अथवा प्रस्तुत करने वाले संवाददाता के नाम को बाइ लाइन कहते हैं। आपने देखा होगा कि समाचारों के साथ संवाददाता का नाम भी लिखा होता है। उसे ही बाइ लाइन कहते हैं।

समाचार-स्रोत

यह समाचार का एक अत्यंत महत्वपूर्ण अंग है। इससे समाचार की प्रामाणिकता का पता चलता है। इसमें समाचार का ब्यौरा देने से पहले यह बताया जाता है कि समाचार कहाँ से प्राप्त हुआ और किस माध्यम से प्राप्त हुआ।

अख़बार पढ़ते समय आपने ध्यान दिया होगा कि एजेंसियों के बाद शहर का नाम लिखा होता है। यदि ‘नई दिल्ली’ लिखा है, तो इसका अर्थ यह है कि यह समाचार नई दिल्ली से लिया गया है या यह घटना नई दिल्ली में घटी है। उसके बाद घटना की तिथि दी जाती है। आपने ध्यान दिया होगा कि प्रायः अख़बारों में समाचारों की तिथि उस समाचारपत्र की प्रकाशन-तिथि से एक दिन पूर्व की दी गई होती है। ऐसा इसलिए होता है कि अख़बार रात को छपते हैं और सुबह-सुबह आपके पास पहुँच जाते हैं। यानी ये समाचार एक दिन पूर्व की रात तक के होते हैं।

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि समाचार **किसने** प्राप्त किया, **कहाँ** से प्राप्त किया और **कब** प्राप्त किया, इनकी जानकारी को समाचार-स्रोत कहा जाता है।



इन्द्रो

इन्द्रो अंग्रेज़ी के 'इन्द्रोडक्शन' (परिचय) का संक्षिप्त रूप है। आपने देखा होगा कि जो समाचार लंबे या मध्यम आकार के होते हैं, उनमें शुरू में थोड़े मोटे अक्षरों में एक पैरा दिया जाता है, जिसमें संक्षेप में पूरे समाचार की मुख्य सूचनाएँ रहती हैं। इन्द्रो को पढ़कर पूरे समाचार की मुख्य जानकारियाँ एक बार में प्राप्त की जा सकती हैं।

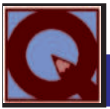
ब्यौरा

इन्द्रो के बाद समाचार थोड़े विस्तार से दिया जाता है। इसे ही समाचार या घटना का ब्यौरा कहते हैं। इसमें घटना से संबंधित सभी जानकारियाँ दी जाती हैं। घटना कब हुई, किस स्थिति में हुई क्यों हुई और उसके क्या परिणाम हो सकते हैं, उस घटना पर किसकी क्या प्रतिक्रिया हुई आदि-आदि।

समाचार-प्रस्तुति

जैसा कि जान चुके हैं, समाचारों का कार्य किसी भी घटना के बारे में लोगों को सूचना देना होता है। इस तरह से किसी भी संवाददाता को समाचार में अपने विचार व्यक्त करने की बहुत कम गुंजाइश रहती है। किंतु, कई बार देखा जाता है कि विवादास्पद समाचारों में संवाददाता अपने विचारों से मेल खाते तथ्यों अथवा अपने विचारों से मेल खाते विचारों वाले व्यक्तियों के कथनों को अधिक उजागर कर, समाचार को अपने अनुकूल बनाकर, प्रस्तुत कर देते हैं। उस समाचार के पीछे उनकी विचारधारा अथवा विचार दृष्टि छिपी रहती है। आप एक ही विषय पर छपे अलग-अलग समाचारों की तुलना करके इस बात को आसानी से समझ सकते हैं। लेकिन अख़बार को किसी का पक्षधर अथवा विरोधी न होकर तटस्थ और निष्पक्ष रहना चाहिए। अधिकांश अख़बार ऐसे ही होते हैं।

यदि आपको अख़बार पढ़ने की नियमित आदत है, तो आप समाचारों की प्रस्तुति और समाचारों के तथ्यों को पढ़कर अपनी भी राय बना सकते हैं और समाचारों पर निष्पक्ष टिप्पणी कर सकते हैं।



पाठगत प्रश्न-9.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. अख़बारों में प्रकाशित किए जाते/की जाती हैं—

- | | | | |
|-----------------------------|--------------------------|------------------------|--------------------------|
| (क) सभी घटनाएँ | <input type="checkbox"/> | (ख) परिचितों के समाचार | <input type="checkbox"/> |
| (ग) सिर्फ़ राजनीतिक सूचनाएँ | <input type="checkbox"/> | (घ) महत्वपूर्ण घटनाएँ | <input type="checkbox"/> |



टिप्पणी

अख़बार की दुनिया

2. समाचार-स्रोत के अंतर्गत निम्नलिखित में से कौन-सी बात नहीं आती?

(क) समाचार किसने प्राप्त किया ☐ (ख) कहाँ से प्राप्त किया ☐

(ग) कब प्राप्त किया ☐ (घ) क्यों प्राप्त किया ☐

3. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन असत्य है?

(क) समाचार तथ्यों पर आधारित होते हैं। ☐

(ख) समाचार संवाददाता के विचारों पर आधारित होते हैं। ☐

(ग) समाचार तटस्थ और निष्पक्ष होते हैं। ☐

(घ) समाचारों की भाषा अलग हो सकती है। ☐

9.2.2 संपादकीय

समाचारों पर आधारित संपादक की टिप्पणी को संपादकीय कहते हैं। संपादकीय के लिए हर अख़बार में बीच का एक पूरा पृष्ठ अलग से निर्धारित होता है। इसमें समाचारों पर संपादक की टिप्पणियाँ तो होती ही हैं, साथ ही समाचारों के विभिन्न पहलुओं पर आलोचनात्मक लेख और पाठकों की प्रतिक्रियाएँ भी प्रकाशित की जाती हैं। संपादकीय में समाचारों अथवा घटनाओं पर संपादक को अपने विचार प्रकट करने की पूरी छूट होती है। समाचारों को पढ़ने के बाद पाठक के मन में कई प्रकार की जिज्ञासाएँ उत्पन्न होती हैं और वह यह जानने के लिए उत्सुक रहता है कि संबंधित घटना उचित थी या नहीं। बहुत से समझदार पाठक समाचारों को पढ़ने के तुरंत बाद संबंधित घटना के बारे में अपनी राय बना लेते हैं और अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर देते हैं। लेकिन बहुत से पाठक ऐसे होते हैं, जो संपादकीय में प्रकाशित समाचार के विभिन्न पहलुओं को जानने के बाद अपनी राय बनाते हैं। इस तरह संपादकीय किसी भी अख़बार का एक बहुत ही महत्वपूर्ण अंग होता है। अतः संपादकीय टिप्पणियों और लेखों के आधार पर संपादक अथवा अख़बार की विचारधारा का आसानी से पता लगाया जा सकता है।

9.2.3 फ़ोटो

अख़बारों में प्रकाशित होने वाले फ़ोटो का महत्व भी समाचारों से कम नहीं होता। अख़बार में छपने वाला फ़ोटो भी अपने आपमें एक समाचार होता है। कई बार आपने देखा होगा कि अख़बार में सिर्फ़ फ़ोटो छपा होता है और उसके नीचे दो-तीन पंक्तियों की सूचना छपी होती है। इसके अलावा समाचार के साथ छपने वाले फ़ोटो के माध्यम से न सिर्फ़ उस घटनाक्रम की प्रामाणिकता का पता चलता है, बल्कि उस समाचार के बहुत सारे पहलुओं की जानकारी भी मिल जाती है। जब आप किसी स्थान पर भूकंप से हुई तबाही का समाचार पढ़ते हैं, तो आपके मन में यह जिज्ञासा अवश्य उठती है कि वहाँ का दृश्य अब कैसा है या वहाँ के लोगों के जीवन पर इसका क्या प्रभाव पड़ा है। ऐसे में यदि उस समाचार के साथ चित्र देखने को मिल जाता है, तो आपकी जिज्ञासा



टिप्पणी

काफ़ी हद तक शांत हो जाती है। अक्सर ऐसा होता है कि समाचार को पढ़ने के बाद आप उतने विचलित नहीं होते, जितने उससे संबंधित चित्र को देखकर हो उठते हैं। कई बार एक फ़ोटो और उसके नीचे दी गई दो पंक्तियों की सूचना आपके मन पर समाचार से अधिक प्रभाव डाल देती है। फ़ोटो देखने के बाद उस घटना के समाचार को विस्तार से पढ़ने की भूख भी आपके अंदर पैदा हो सकती है। इस तरह फ़ोटो जहाँ अपने आप में एक समाचार होता है, वहीं वह एक महत्वपूर्ण समाचार का पूरक और सहायक भी होता है। फ़ोटो के नीचे दी गई सूचना को अख़बार की भाषा में 'कैप्शन' कहते हैं।



क्रियाकलाप-9.2

(क) पिछले दो महीने में जिस समाचार ने आपको बेहद प्रभावित किया उसका वर्णन कीजिए और प्रभावित करने के कारण लिखिए:

.....

.....

.....

(ख) अपने आस-पास के प्रसिद्ध स्थलों, इमारतों, लोगों के चित्र अख़बार-पत्रिकाओं से छाँटकर दिए गए बॉक्स में चिपकाइए और उनके बारे में तीन-चार वाक्य लिखिए।

(i) प्रसिद्ध स्थल

.....

.....

(ii) प्रसिद्ध इमारत

.....

.....

(iii) प्रसिद्ध व्यक्ति

.....

.....

9.2.4 फीचर

'भारत की ये बहादुर बेटियाँ' शीर्षक पाठ आप पढ़ चुके हैं, जो फीचर-शैली में लिखा गया है। आइए, यहाँ थोड़े विस्तार से फीचर के बारे में जानें :



टिप्पणी

अख़बार की दुनिया

आप जानते हैं कि अख़बारों में समाचार छपते हैं। समाचारों से केवल यह जानकारी मिलती है कि क्या हुआ? उदाहरण के लिए, कल्पना चावला ने अंतरिक्ष में उड़ान भरी, तो अख़बारों में यह ख़बर छपी कि एक भारतीय महिला ने अंतरिक्ष की यात्रा की। लेकिन, कल्पना कौन है? वह अंतरिक्ष में जाने का साहस कैसे जुटा पाई? उसकी इस बहादुरी ने समाज को किस प्रकार प्रभावित किया? इन बातों को सरल भाषा और मनोरंजक शैली में बताया जाए, तो वह फ़ीचर होगा। अर्थात् 'क्या हुआ?' यह बताना समाचार है। 'जो कुछ हुआ, वह क्यों और कैसे हुआ और इसका परिणाम क्या होगा'—यह बताना फ़ीचर का काम है। फ़ीचर में घटनाओं को हमारी आँखों के आगे उतार दिया जाता है, कानों में घटनाओं की आवाज़ गुँजा दी जाती है। अख़बार के तीन काम बताए जाते हैं—सूचना देना, शिक्षा देना और मनोरंजन करना। समाचार मात्र सूचना देते हैं। फ़ीचर हमें सूचना के आधार पर शिक्षित करते हैं और हमारा मनोरंजन करते हैं। फ़ीचर में इस बात का ध्यान रखा जाता है कि वह रोचक भी हो। फ़ीचर कई प्रकार के होते हैं या हो सकते हैं—जनरुचि वाले, गंभीर विश्लेषणात्मक, हल्के-फुल्के और मनोरंजक तथा व्यक्तित्व-संबंधी। 'भारत की ये बहादुर बेटियाँ' व्यक्तित्व-संबंधी या 'पर्सनैलिटी फ़ीचर' है।

9.2.5 लेख

अख़बारों में प्रायः दो प्रकार के लेख प्रकाशित होते हैं — एक प्रकार के लेख वे होते हैं, जो संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित होते हैं और दूसरे प्रकार के लेख वे होते हैं, जो फ़ीचर वाले पन्नों पर प्रकाशित होते हैं। संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित होने वाले लेखों की अनिवार्य शर्त होती है कि वे किसी समाचार अथवा घटनाक्रम पर आधारित हों, लेकिन फ़ीचर वाले पन्नों पर प्रकाशित होने वाले लेख किसी भी क्षेत्र से संबंधित हो सकते हैं — राजनीति, समाज, साहित्य, खेल, फैशन, फ़िल्म, व्यापार, पर्यटन आदि। इसमें यह शर्त नहीं होती कि ये किसी घटना-क्रम पर आधारित हों। इनमें सूचनाओं का होना अनिवार्य होता है। किसी समाचार अथवा घटना-क्रम को आधार बनाकर भी फ़ीचर लिखे जा सकते हैं। आजकल अख़बारों की कोशिश होती है कि ऐसे ही लेख प्रकाशित किए जाएँ, जिनमें समाचारों और सूचनाओं का अधिक-से-अधिक समावेश हो। इस तरह अब अख़बारों में प्रकाशित होने वाले फ़ीचरों में भी समाचारों और सूचनाओं को आधार बनाने की परंपरा तेज़ी से विकसित हुई है।

9.2.6 साक्षात्कार

साक्षात्कार यानी किसी व्यक्ति से बातचीत। इसे अंग्रेज़ी में 'इंटरव्यू' कहा जाता है। साक्षात्कार अख़बार का एक अनिवार्य अंग है। यह अपने आप में एक स्वतंत्र विधा है, किंतु इसका उपयोग अख़बार के अन्य अंगों में भी किया जाता है। इसका उपयोग समाचारों के लिए तो किया ही जाता है, साथ ही लेखों और फ़ीचर के लिए भी किया जा सकता है। साक्षात्कार से सूचनाओं की प्रामाणिकता पुष्ट होती है।



टिप्पणी

साक्षात्कार मुख्यतः आमने-सामने बैठकर बातचीत के माध्यम से किसी विषय पर जानकारी प्राप्त करने को कहते हैं, लेकिन आजकल फ़ोन पर भी बातचीत के आधार पर सूचनाएँ प्राप्त की जाती हैं। यह भी साक्षात्कार का एक तरीका है।

साक्षात्कार किसी व्यक्ति से किसी घटना, वस्तु, स्थिति, विषय-वस्तु आदि की जानकारी प्राप्त करने के उद्देश्य से तो लिया ही जाता है, साथ ही कुछ प्रसिद्ध व्यक्तियों से उनके जीवन के बारे में जानकारी प्राप्त करने के उद्देश्य से भी लिया जाता है। अख़बार का एक स्वतंत्र अंग होते हुए भी साक्षात्कार इसके अन्य अंगों के लिए सहायक अंग के रूप में उपयोगी होता है। जैसे— इससे विशिष्ट व्यक्तियों के बारे में जानकारी मिलती है। इससे समाचार सजीव और प्रामाणिक बन जाते हैं। इन्टरनेट के माध्यम से वीडियो फ़ोन का प्रयोग करके (टेली कांफ़रेन्सिंग द्वारा) भी साक्षात्कार लिया जाता है।



क्रियाकलाप-9.2

कारीगर, शिक्षक, डॉक्टर में से किसी एक व्यक्ति से मिलकर नीचे दिए गए बिंदुओं को ध्यान में रखकर उनसे प्रश्न पूछिए (उनका साक्षात्कार लीजिए)। आपने क्या सवाल पूछे और उनके क्या जवाब मिले, लिखिए:

(i) प्रमुख चुनौतियाँ

प्रश्न

उत्तर.....

(ii) लोगों का उनके प्रति व्यवहार

प्रश्न

उत्तर.....

(iii) पारिवारिक-सामाजिक जीवन

प्रश्न

उत्तर.....

(iv) वे किस काम में निपुण हैं

प्रश्न

उत्तर.....



टिप्पणी

अख़बार की दुनिया

(v) आसपास के परिवेश के बारे में उनकी प्रतिक्रिया

प्रश्न

उत्तर.....



पाठगत प्रश्न-9.2

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प छाँटकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. संपादकीय आधारित होता है—

(क) लेखों पर ☐ (ख) समाचारों पर ☐

(ग) फीचर पर ☐ (घ) पाठकों के विचारों पर ☐

2. फोटो के नीचे छपी सूचना को अख़बार की भाषा में कहते हैं—

(क) इंट्रो ☐ (ख) सब हेडिंग ☐

(ग) कैप्शन ☐ (घ) समाचार-स्रोत ☐

3. फीचर में किसका होना अनिवार्य होता है?

(क) सूचना ☐ (ख) स्रोत की जानकारी ☐

(ग) संपादक के विचार ☐ (घ) फोटो ☐

4. नीचे दिए गए वाक्यों में से सही वाक्य के सामने सही (✓) का निशान तथा गलत वाक्य के सामने गलत (X) का निशान लगाइए :

(क) संपादकीय में समाचारों पर संपादक की स्वतंत्र टिप्पणी होती है। ()

(ख) संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित लेखों के लिए आवश्यक नहीं कि वे समाचारों अथवा किसी घटनाक्रम पर आधारित हों। ()

(ग) फोटो भी अपने आप में एक समाचार होता है। ()

(घ) यह आवश्यक नहीं कि फीचर सूचनापरक हों। ()

(ङ) साक्षात्कार का प्रयोग सिर्फ समाचारों के लिए किया जाता है। ()



टिप्पणी

9.2.7 व्यंग्य-चित्र (कार्टून)

अख़बारों में मुख्य रूप से दो प्रकार के व्यंग्य-चित्र या कार्टून छपते हैं — एक तो समाचारों पर आधारित और दूसरे शुद्ध मनोरंजन के लिए। समाचारों पर आधारित व्यंग्य-चित्र सिंगिल बाक्स अर्थात् एक घेरे में होते हैं। शुद्ध मनोरंजन वाले व्यंग्य-चित्र या कार्टून एक से अधिक बॉक्स के भी हो सकते हैं।

समाचारों पर आधारित कार्टून प्रायः अख़बार के मुख्य पृष्ठ पर प्रकाशित किए जाते हैं और इनका स्थान हर अख़बार में अपने-अपने हिसाब से निर्धारित होता है।

समाचारों पर आधारित कार्टून अख़बार की संपादकीय टिप्पणियों, लेखों और फ़ोटो की तरह ही महत्वपूर्ण होता है। एक छोटे से कार्टून के माध्यम से किसी घटनाक्रम पर जितनी तीखी टिप्पणी की जा सकती है, उतनी तीखी टिप्पणी आधे पृष्ठ के लेख में भी मुश्किल से की जा सकती है। कई बार एक कार्टून के दो शब्द बहुत सारी टिप्पणियों पर भारी पड़ते हैं।

आपने महसूस किया होगा कि एक छोटे-से चित्र और छोटी-सी टिप्पणी के माध्यम से जितनी तीखी धारदार बात एक कार्टून कह जाता है, वही बात एक लेख अथवा टिप्पणी में कहने के लिए काफी शब्दों की ज़रूरत पड़ती है।

दूसरे प्रकार के कार्टून प्रायः फ़ीचर वाले पन्नों पर छपते हैं। इनमें कथा को माध्यम बनाकर अथवा किसी चुटकुले अथवा व्यंग्य को आधार बनाकर चित्र दिए गए होते हैं। ऐसे कार्टूनों का उद्देश्य प्रायः लोगों का मनोरंजन करना होता है। कई अख़बारों में कार्टून लगातार आते हैं। जैसे— आर.के. लक्ष्मण, शंकर आदि के कार्टून।

9.2.8 विज्ञापन

विज्ञापन अख़बारों की आय का प्रमुख साधन होते हैं। ये न तो समाचारों अथवा संपादकीय की तरह अख़बारों के अनिवार्य अंग होते हैं और न ही अख़बारों की पहचान बनाने में सहायक होते हैं। चूँकि मुख्यतः इनसे ही अख़बारों की आमदनी होती है, अतः विज्ञापन जुटाने के लिए संवाददाताओं की तरह ही विभिन्न क्षेत्रों में एजेन्ट और अख़बार कर्मचारी नियुक्त करते हैं। अख़बारों को जितने अधिक विज्ञापन प्राप्त होते हैं, उन्हें उतनी ही आय होती है। इस तरह विज्ञापन अख़बार का एक अनिवार्य अंग बन चुके हैं।

किंतु, यह कहना कि विज्ञापन सिर्फ आय के स्रोत होते हैं, पूरी तरह सही नहीं होगा। विज्ञापन कई तरह से पाठकों को लाभ पहुँचाते हैं और शिक्षित भी करते हैं। विज्ञापन

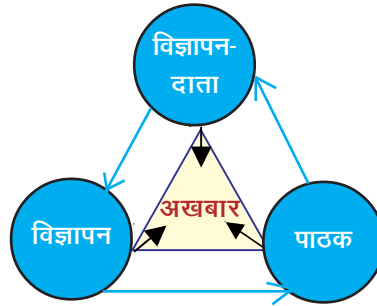


टिप्पणी

अख़बार की दुनिया

से जहाँ अख़बारों को लाभ होता है, वहीं पाठकों और विज्ञापनदाता को भी लाभ पहुँचता है। यह लाभ का एक चक्रीय क्रम बनाता है।

आप एक उदाहरण से इसे आसानी से समझ सकते हैं — मान लीजिए, आप पाँच दोस्त हैं। आपमें से पाँचों की रुचियाँ अलग-अलग हैं। आप पाँचों को अलग-अलग चीज़ें ख़रीदनी हैं। आप उन चीज़ों के बारे में जानना चाहते हैं। आपमें से एक दोस्त कंप्यूटर ख़रीदना चाहता है और बाज़ार में गए बिना, घर बैठे ही जानकारी प्राप्त करना चाहता है कि कौन-सा कंप्यूटर ख़रीदना उचित होगा, जो उसके बजट में भी आए और गुणवत्ता में भी बेहतर हो। दूसरा दोस्त कपड़े ख़रीदना चाहता है। तीसरा दोस्त नौकरी तलाश रहा है, चौथा दोस्त अपनी बहन के विवाह के लिए वर की तलाश में है और आप यह जानना चाहते हैं कि पुस्तक-मेले में आपकी रुचि की पुस्तकें कहाँ मिलेंगी। आप पाँचों अख़बार उठाते हैं और अपनी रुचि की जानकारी प्राप्त कर लेते हैं तथा लाभ उठाते हैं। इसी तरह अख़बार विज्ञापन के माध्यम से लोगों तक सूचनाएँ पहुँचाता है और लाभ का एक चक्रीय क्रम बनाता है। विज्ञापन के इस चक्रीय क्रम को निम्न रेखांकन के माध्यम से समझा जा सकता है—



विज्ञापन की भाषा

हम बात कर चुके हैं कि विज्ञापन का उद्देश्य होता है— उत्पाद अथवा अपनी योजना की जानकारी लोगों तक पहुँचाना। ऐसे में विज्ञापन की भाषा का बहुत बड़ा योगदान होता है। विज्ञापन में कम-से-कम शब्दों के माध्यम से उत्पाद अथवा योजना की संपूर्ण जानकारी देनी होती है। साथ ही यह भी ध्यान रखना आवश्यक होता है कि भाषा रोचक हो, सरल हो और पढ़ने वाले को प्रभावित करे। आपने ऐसे बहुत से विज्ञापन देखे होंगे, जिनमें बहुत सारी सूचनाओं के बजाय सिर्फ़ एक या दो वाक्यों के नारे लिखे होते हैं और वे नारे उपभोक्ता को इतना प्रभावित कर जाते हैं, जितना एक लेख अथवा टिप्पणी भी नहीं कर पाती। विज्ञापन में स्थान की भी सीमा होती है। उपभोक्ता किसी विज्ञापन को लेख अथवा फ़ीचर की तरह नहीं पढ़ना चाहता। इसलिए विज्ञापन बनाते समय यह ध्यान रखना आवश्यक होता है कि वे संक्षिप्त हों, रोचक हों, आकर्षक हों, प्रभावशाली हों और पूरी जानकारी प्रस्तुत करें। विज्ञापन उपभोक्ता वर्ग को कैसे प्रभावित करें, इस पर विशेष ध्यान दिया जाता है।



इसके अलावा अख़बार के लिए विज्ञापन बनाते समय इस बात को ध्यान में रखना आवश्यक होता है कि इन विज्ञापनों को उपभोक्ता देख भी सकता है और पढ़ भी सकता है। ये विज्ञापन ज़्यादा समय तक उपभोक्ता के सामने रहते हैं। एक अख़बार का विज्ञापन टीवी अथवा रेडियो के विज्ञापन से अधिक समय तक उपभोक्ता के बीच में रहता है।

9.2.9 पत्र

पाठकों के पत्र अख़बारों के लिए दिशा-निर्देश का कार्य करते हैं। समाचारों, संपादकीय अथवा अन्य सामग्रियों पर पाठकों की प्रतिक्रिया से अख़बारों को जहाँ अपने अंदर सुधार करने का मौका मिलता है, वहीं उत्साह भी बढ़ता है। पाठकों के पत्र भी कई बार संपादकीय अथवा अन्य लेखों की तरह ही प्रभावकारी सिद्ध होते हैं, क्योंकि समाचारों अथवा संपादकीय टिप्पणियों को पढ़ने के बाद पाठक के मन में जो विचार उत्पन्न होते हैं, उन्हें वह अपने पत्रों में व्यक्त करता है। इसके अलावा पाठकों के पत्रों के माध्यम से उनकी समस्याओं को भी जानने का मौका मिलता है। कई ऐसी समस्याओं का भी पता चलता है, जिनकी तरफ़ अख़बारों का ध्यान कभी गया ही नहीं।

यानी, पाठकों के पत्र भी संपादकीय फीचर और लेखों की तरह ही महत्वपूर्ण होते हैं।

9.2.10 मौसम और बाज़ार-भाव

जिस तरह लोगों को दूसरे समाचारों की प्रतीक्षा रहती है, उसी तरह बहुत से ऐसे लोग भी होते हैं, जिन्हें मौसम और बाज़ार भाव की जानकारी प्राप्त करनी होती है। कई बार आप भी जानना चाहते होंगे कि कल कितनी गर्मी थी, सर्दी थी या कल बारिश होगी या नहीं होगी। फिर आप उसी तरह अपनी दिनचर्या निर्धारित करते हैं। इसी प्रकार, किसानों और व्यापारियों तथा मछुआरों को मौसम की जानकारी की ज़रूरत होती है। यात्रा करने वालों के लिए मौसम का समाचार ज़रूरी होता है।

वस्तुओं के भाव रोज़ बढ़ते-घटते रहते हैं। ऐसे में व्यापारियों और दुकानदारों को बाज़ार भाव की जानकारी की आवश्यकता होती है। यदि आप कभी सुनार की दुकान पर जाएँ और सोने का भाव पूछें, तो दुकानदार तुरंत उस दिन का सोने का भाव बता देगा। इसकी जानकारी उसे अख़बार से मिलती है। इसी तरह रोज़ के बाज़ार-भाव अख़बारों में प्रकाशित किए जाने से न सिर्फ़ दुकानदारों और व्यापारियों को, बल्कि ग्राहकों को भी सुविधा होती है।



पाठगत प्रश्न-9.3

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. अख़बार में कार्टून छापने का क्या उद्देश्य है?

- (क) मनोरंजन और तीखी टिप्पणी ☐ (ख) विज्ञापन की सूचना देना ☐
करना



टिप्पणी

अख़बार की दुनिया

- (ग) शिक्षा प्रदान करना ☐ (घ) सामाजिक घटना पर राय देना ☐
2. विज्ञापन का उद्देश्य क्या नहीं है?
- (क) सूचना ☐ (ख) भाषा-शिक्षण ☐
- (ग) व्यवसाय में वृद्धि ☐ (घ) प्रचार-प्रसार ☐
3. पाठकों के पत्रों को अख़बार में क्यों शामिल किया जाता है?
- (क) प्रचार के लिए ☐ (ख) पाठकों की भागीदारी के लिए ☐
- (ग) प्रतियोगिता के लिए ☐ (घ) समाचार देने के लिए ☐
4. नीचे दिए गए वाक्यों में से सही वाक्य के सामने सही (✓) का निशान तथा गलत वाक्य के सामने गलत (X) का निशान लगाइए :
- (क) समाचारों पर आधारित कार्टून प्रायः सिंगिल बॉक्स के होते हैं। ()
- (ख) बड़े विज्ञापनों को प्रायः वर्गीकृत विज्ञापन के अंतर्गत प्रकाशित किया जाता है। ()
- (ग) बाज़ार भाव से ग्राहकों को कोई लाभ नहीं होता। ()
- (घ) विज्ञापन लाभ का एक चक्रीय क्रम तैयार करते हैं। ()

9.3 समाचारों की भाषा

समाचारों की भाषा सरल होती है। अख़बार, रेडियो और टेलीविज़न के माध्यम से हम समाचारों से अवगत होते हैं। अख़बार पढ़कर, रेडियो सुनकर और टेलीविज़न देख-सुनकर हम समाचार की जानकारी प्राप्त करते हैं। माध्यम अलग-अलग होने के बावजूद समाचारों के मामले में एक समानता यह होती है कि उनकी भाषा सरल, सुबोध और तुरंत समझ में आने वाली होती है।

आप अलग-अलग अख़बारों को पढ़ें। आप महसूस करेंगे कि इनमें कठिन शब्दों के प्रयोग से बचा जाता है। परंतु अलग-अलग प्रकार के समाचारों में अलग-अलग प्रकार की शब्दावलियों का प्रयोग किया जाता है। इसी प्रकार, अलग-अलग समाचार-पत्रों की भाषा शैली अलग-अलग होती है। स्थानीय अख़बारों में स्थानीय शब्दों का भी इस्तेमाल किया जाता है। उद्देश्य एक ही है—पाठक को समाचार बिना किसी दिक्कत के समझ में आ जाए।

आपने ध्यान दिया होगा कि फैशन और फ़िल्मी दुनिया के समाचारों अथवा लेखों में हिंदी के साथ-साथ अंग्रेज़ी और उर्दू के शब्दों का भी बड़ी आज़ादी के साथ प्रयोग होता है—जैसे, जरी, मिररवर्क, प्रिंट, मूड, मूवी, मुहूरत आदि। खेल-संबंधी समाचारों में फ़ॉलोऑन, चैंपियन आदि शब्दों को देख सकते हैं। इसी तरह क्रिकेट में विकेट, लेगबाई, हिट



विकेट, स्ट्रेट ड्राइव आदि शब्दों का प्रयोग होता है। बाज़ार अथवा व्यापार-संबंधी समाचारों की भाषा बिल्कुल अलग होती है। उनमें गढ़े हुए शब्दों का प्रयोग अब इतना होने लगा है कि व्यापार की भाषा ही अलग हो गई है।

बाज़ार से संबंधित समाचारों में 'जीरा टूटा', 'तस्करी आवक', 'सोने में नरमी', 'बिकवाली' आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है। इनका प्रयोग प्रायः अन्य स्थानों पर नहीं होता। इसी तरह आपने पढ़ा होगा 'चना उछला', 'उड़द लुढ़की' या 'सरसों के दाम खड़े'।

इसी तरह, राजनीतिक समाचारों की भी अपनी अलग भाषा होती है। आप स्थानीय समाचारों के साथ तुलना करके देखें, तो राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय राजनीति के समाचारों की भाषा अलग होती है। राजनीतिक समाचारों में कुछ मुहावरे प्रचलित हैं, जैसे—ठीकरा दूसरे के सिर फोड़ना, सेहरा बाँधना आदि। लेकिन इन समाचारों में प्रायः व्यापार और खेल—जगत के समाचारों की भाषा की तरह गढ़े हुए शब्द नहीं होते। अंग्रेज़ी के शब्दों के प्रयोग भी प्रायः कम ही देखने को मिलते हैं।

समाचारों की भाषा चूँकि सूचनापरक होती है, इसलिए इसमें सहजता, सरलता और प्रवाह का होना आवश्यक होता है। समाचारों की भाषा में यह ध्यान रखना आवश्यक होता है कि वह सर्वसाधारण की समझ में आ सके। इसलिए समाचारों की भाषा आम बोलचाल की भाषा होती है। ख़बर अनजानों को भी जोड़ देती है।

9.4 इलेक्ट्रॉनिक अख़बार : अख़बार का एक नया रूप

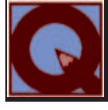
इलेक्ट्रॉनिक अख़बारों का प्रचलन इन दिनों काफी बढ़ा है। कागज़ पर छपने वाले अख़बार से इसका स्वरूप थोड़ा भिन्न होता है। इसे केवल कंप्यूटर पर इन्टरनेट के द्वारा ही पढ़ा जा सकता है। इसलिए इसका लाभ सिर्फ़ वे लोग ही उठा सकते हैं, जिनके पास कंप्यूटर है और वह कंप्यूटर इन्टरनेट से जुड़ा हुआ है। इलेक्ट्रॉनिक अख़बार आम अख़बार के मुकाबले अधिक महँगा साबित होता है, किंतु इसकी विशेषता यह है कि आम अख़बार के मुकाबले इसकी पहुँच अथवा प्रसार व्यापक होता है। इलेक्ट्रॉनिक अख़बार को दुनिया के किसी भी कोने में पढ़ा जा सकता है। अमेरिका में प्रकाशित होने वाले अख़बार को भारत के किसी गाँव में बैठे व्यक्ति तक पहुँचाने में कई दिन का समय लग सकता है, जबकि यदि उसी अख़बार को इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है, तो वह पलक झपकते ही पहुँच जाता है। आज जिस तरह से लोगों में पल-पल की सूचनाओं के प्रति जिज्ञासा तेज़ी से बढ़ती जा रही है, उसमें इलेक्ट्रॉनिक अख़बार बहुत तेज़ी से लोकप्रिय हो रहे हैं।

इलेक्ट्रॉनिक अख़बारों में भी समाचारों की चयन-प्रक्रिया और प्रस्तुत करने के तरीके कागज़ पर प्रकाशित होने वाले अख़बारों की तरह ही होते हैं। उनमें भी संवाददाता, संपादक, फोटो, ग्राफ़िक, कार्टून आदि की भूमिका उतनी ही महत्वपूर्ण होती है।



टिप्पणी

अख़बार की दुनिया



पाठगत प्रश्न-9.4

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. व्यापार-जगत के समाचारों की भाषा में बनावटी शब्दों का प्रयोग—

- (क) बिल्कुल नहीं होता। ☐ (ख) अधिक होता है। ☐
(ग) कम होता है। ☐ (घ) कभी कम कभी अधिक होता है। ☐

2. समाचारों की भाषा में उदाहरण की गुंजाइश—

- (क) होती है। ☐ (ख) नहीं होती। ☐
(ग) अधिक होती है। ☐ (घ) कम होती है। ☐

3. इलैक्ट्रॉनिक अख़बारों को पढ़ा जा सकता है सिर्फ—

- (क) टेलीविजन पर ☐ (ख) कंप्यूटर पर ☐
(ग) कागज़ पर ☐ (घ) रेडियो पर ☐

4. निम्नलिखित वाक्यों में सही के सामने सही (✓) का तथा गलत के सामने गलत (X) का निशान लगाइए :

- (क) समाचारों की भाषा में व्यंग्य का प्रयोग किया जाता है। ()
(ख) समाचारों की भाषा मुहावरेदार नहीं हो सकती। ()
(ग) समाचार पुस्तकों में लिखी बातें ही बताते हैं। ()
(घ) समाचार पाठक को शिक्षित भी करते हैं। ()
(च) अलग-अलग विषयों के समाचारों की भाषा अलग-अलग हो सकती है। ()



आपने क्या सीखा

- अख़बार के अंग होते हैं— समाचार, संपादकीय, फ़ोटो, फ़ीचर, लेख, साक्षात्कार, कार्टून, विज्ञापन, पत्र, मौसम तथा बाज़ार-भाव।
- समाचार अख़बार का मुख्य आकर्षण होते हैं। समाचार के विषय मुख्यतः होते हैं— राजनीतिक, सामाजिक, व्यापार अथवा अर्थ जगत, खेल जगत तथा विविध। ये तीन प्रकार के होते हैं— राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय तथा स्थानीय। विविध समाचारों के अंतर्गत साहित्य, संस्कृति, विज्ञान, पर्यावरण, अपराध आदि से संबंधित समाचार आते हैं।
- समाचारों का चयन उनके महत्त्व और उपयोगिता के अनुसार किया जाता है।



टिप्पणी

- समाचार के अंग मुख्य रूप से होते हैं— मेन हेडिंग (मुख्य शीर्षक), सब-हेडिंग (उप-शीर्षक), समाचार—स्रोत, इंट्रो, ब्यौरा।
- समाचारों में किसी भी घटना से जुड़े सभी प्रमुख तथ्यों को प्रस्तुत करने की कोशिश की जाती है। इसकी प्रस्तुति में संवाददाता को अपने विचार व्यक्त करने की छूट नहीं होती।
- समाचारों अथवा घटनाक्रम पर संपादक के विचारों को संपादकीय कहते हैं। इसमें संपादक को अपने विचार व्यक्त करने की पूरी छूट होती है।
- अख़बारों में प्रकाशित होने वाले फ़ोटो भी एक प्रकार से समाचार का काम करते हैं। ये अपने आप में संपूर्ण समाचार भी होते हैं और समाचारों के पूरक भी।
- फ़ीचर बहुत सारी विधाओं का मिला-जुला रूप होता है। इसकी मुख्य विशेषता है—सूचना देना।
- अख़बारों में प्रायः दो प्रकार के लेख प्रकाशित किए जाते हैं— एक वे, जो समाचारों पर आधारित होते हैं और दूसरे वे, जो विविध विषयों पर केंद्रित होते हैं। समाचारों पर आधारित लेख प्रायः संपादकीय पृष्ठ पर और विविध विषयों से जुड़े लेख फ़ीचर वाले पृष्ठों पर प्रकाशित किए जाते हैं।
- किसी विषय पर जानकारी लेने अथवा किसी प्रसिद्ध व्यक्ति से उसके बारे में जानने के लिए की गई बातचीत को साक्षात्कार कहते हैं।
- किसी भी उत्पाद अथवा योजना की जानकारी देने के उद्देश्य से सरल और रोचक भाषा में आकर्षक ढंग से प्रस्तुत की गई सूचनाओं को विज्ञापन कहते हैं।



पाठांत प्रश्न

1. अख़बार के मुख्य रूप से कितने अंग होते हैं? किसी एक प्रमुख अंग की विशेषता बताइए।
2. समाचारों के कितने प्रकार होते हैं? खाका तैयार कीजिए।
3. समाचारों के चयन में मुख्य रूप से कौन-कौन सी सावधानियाँ बरतनी पड़ती हैं?
4. समाचार स्रोत का क्या अभिप्राय है— विस्तार से समझाइए।
5. संपादकीय और फ़ीचर में क्या अंतर होता है— स्पष्ट कीजिए।
6. समाचारों पर आधारित लेखों और फ़ीचर के लेखों में क्या भिन्नताएँ होती हैं?
7. विज्ञापन के आवश्यक गुण क्या हैं?
8. समाचारों की भाषा की विशेषताएँ बताइए।



टिप्पणी

अखबार की दुनिया

9. अखबार तथा पत्रिकाओं से प्रसिद्ध व्यक्तियों, इमारतों और स्थानों के चित्र एकत्रित कीजिए तथा उनके विषय में आवश्यक और महत्वपूर्ण जानकारियाँ देते हुए एक परियोजना तैयार कीजिए।
10. किसी समसामयिक घटना पर एक फीचर लिखिए।
11. किसी अखबार का एक प्रारूप तैयार कर उसके विभिन्न प्रकारों को रेखांकित कीजिए।



उत्तरमाला

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

9.1 1. (घ), 2. (घ), 3. (ख)

9.2 1. (ख), 2. (ग), 3. (क), 4. (ग)

5. (क) ✓, (ख) X, (ग) ✓, (घ) ✓, (ङ) X।

9.3 1. (क), 2. (ख), 3. (ख),

4. (क) ✓, (ख) X, (ग) X, (घ) ✓।

9.4 1. (ख), 2. (ख), 3. (ख), 4. (क) X, (ख) ✓, (ग) X, (घ) ✓, (च) ✓।